'इंटरनेट के बजाय किताबें करेंगी तनावमुक्त'

जागरण संवाददाता, नई दिल्ली : अमेरिका में भारत के पूर्व राजदूत एवं लेखक नवतेज सरना ने कहा कि उन्हें डिजिटल माध्यम से कोई समस्या नहीं है, लेकिन उस पर उपलब्ध सामग्री का स्तर चिंता में डालने वाला है। उसे साहित्य नहीं कहा जा सकता। उन्होंने सभी लोगों विशेषतः बच्चों से अनुरोध किया कि वह इंटरनेट, फोन आदि के बजाय किताबें पढ़ने की कोशिश करें, जिससे वे तनावमुक्त हो सकेंगे।

वे साहित्य अकादमी की ओर से आयोजित 'पुस्तकायन' पुस्तक मेले के तृतीय संस्करण के भव्य उद्घाटन अवसर को संबोधित कर रहे थे। यह 10 दिवसीय मेला मंडी हाउस स्थित साहित्य अकादमी परिसर में लगा है, जिसमें कविता, कहानी और व्यंग्य पाठ के साथ ही साहित्य आधारित विभिन्न विषयों में सम्मेलन के साथ प्रतियोगिता का आयोजन किया गया है। नवतेज सरना ने कहा कि साहित्य अकादमी भारतीय साहित्य का दिल है और यहां 24 भारतीय भाषाओं के बीच भारतीय विविधता में एकता को जीवंत होते हुए देखा जा सकता है। यह मेला स्वस्थ परंपरा की शुरुआत

पुस्तक मेले पुस्तकायन के उद्घाटन अवसर को संबोधित करते नवतेज सरना
● सौजन्यः साहित्य अकादमी

है, जो भविष्य में बच्चों और युवाओं को पढ़ने के लिए प्रेरित करेगी।

संस्कृति मंत्रालय की अपर सचिव एवं वित्तीय सलाहकार रंजना चोपड़ा ने कहा कि पुस्तकायन ने तीसरे संस्करण तक पहुंचते-पहुंचते ही काफी लोकप्रियता पाई है और किताबों से युवाओं को जोड़ने का महत्वपूर्ण कार्य किया है। उन्होंने अकादमी की ओर से 24 भारतीय भाषाओं में काम करने की प्रशंसा करते हुए कहा कि इस कारण ही हमारी क्षेत्रीय भाषाओं का साहित्य जिंदा है। उन्होंने बच्चों से किताब पढ़ने की आवश्यकता पर बल देते हुए कहा कि इसके जरिये बच्चे आधुनिक समाज के लिए तैयार होंगे। संस्कृति मंत्रालय की संयुक्त सचिव उमा नंदूरी ने मेले की उन्नति की तारीफ करते हुए कहा कि इससे राजधानी में नई पुस्तक संस्कृति का जन्म हो रहा है।

माधव कौशिक ने कहा कि साहित्य अकादमी के इस पुस्तकायन की अनोखी बात यह है कि यहां लेखक-पाठक, प्रकाशक, आलोचक चारों को एक मंच प्रदान करता है जो अन्य पुस्तक मेलों में नहीं होता है। उन्होंने पाठन के सुख का उदाहरण देते हुए कहा कि नई पीढ़ी को तकनीक से सहयोग लेना चाहिए न कि उसका गुलाम बनना चाहिए। साहित्य अकादमी की उपाध्यक्ष कुमुद शर्मा ने कहा कि आज रवींद्र भवन परिसर में इस पुस्तक मेले के जरिए ज्ञान का आलोक फैला है।

साहित्य अकादमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने सभी अतिथियों का स्वागत पुस्तकें एवं अंगवस्त्रम् भेंट करके किया। उद्घाटन सत्र के बाद बहुभाषी कहानी पाठ सत्र की अध्यक्षता पारमिता सतपथी ने की तथा मुकुल कुमार (अंग्रेजी), आशुतोष गर्ग (हिंदी) एवं खुर्शीद आलम (उर्दू) ने अपनी-अपनी कहानियों का पाठ किया।